अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

संत तुलसी साहिब के काव्य में अहिंसा: मानवीय संवेदना एवं आध्यमिक तत्व

शोधार्थी
प्रेम दास
विधांत हिन्दू पी०जी० कॉलेज
(लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ)
गौतम बुद्ध मार्ग, लखनऊ
Email-premdas354@gmail.com

शोध-निर्देशिका
प्रोफ़ेसर सुरभि शुक्ला

शोध सार- प्रस्तुत शोध आलेख में हिंदी साहित्य की मध्यकालीन निर्गुण काव्य धारा के ज्ञानमार्गी संत तुलसी साहिब के काव्य का अनुशीलन करके अहिंसा, जीव मात्र के प्रति दया भाव, ऊंच-नीच के भेदभाव को समाप्त कर आत्मबोध, सहज साधना जैसी तत्वों को जनमानस तक पहुंचाने का प्रयास किया है l संत काव्य जन सामान्य का काव्य है संत कवि समस्त जन समुदाय के प्रतिनिधि कवि थे l संत काव्य जीवन की क्षणभंगुरता, विषय सुख का त्याग, आत्मा परमात्मा का मिलन, घट घट वासी ब्रह्म, माया के बंधन से मुक्ति जैसे तत्वों से परिपूर्ण हैl भारतीय जनमानस के चारित्रिक विकास से लेकर आध्यात्मिक विकास में संत कवियों का योगदान महत्वपूर्ण हैl "संत संप्रदाय विश्व संप्रदाय है और उसका धर्म विश्व धर्म हैl इस विश्व धर्म का मूलाधार है -हृदय की पवित्रता- सम्मत स्वाभाविक और सात्विक आचरण ने ही यहां धर्म का वृहद रूप ग्रहण किया है" 1

निर्गुण परंपरा में अहिंसा केवल नैतिक अनुशासन ही नहीं बल्कि आत्मानुभूति से उद्भुत जीवन दृष्टि हैl संत तुलसी साहिब का काव्य इस आध्यात्मिक अहिंसा को मानवीय मूल्यों, करुणा, समता, प्रेम और लोकमंगल से जोड़कर प्रस्तुत करता है संत तुलसी साहब के काव्य में व्याप्त अहिंसा चेतना व्यक्ति के आंतरिक परिस्कार के साथ-साथ सामाजिक समरसता की भी स्थापना में सहायक हैl मन की वासनाओं का पूर्णतः त्याग स्वार्थ इच्छाओं एवं द्वेष को छोड़कर अंत:कारण की निस्सीम सीमाओं में विशाल धर्म का प्रवेश और समावेश संभव हैl संत सतगुरु की कृपा से यह दुर्लभ कार्य भी सहज संभव हो जाता हैl वह ज्ञान चक्षुओं के प्रदाता भक्ति मुक्ति के दाता हैंl

बीज शब्द- संत तुलसी साहिब, निर्गुण भक्ति, अहिंसा, सहज साधना, नामजप लोकमंगल

शोध आलेख-- भारतीय संतो, कवियों, मनीशियों, दार्शनिकों की प्रवृत्ति ज्ञान की अभिवृद्धि और स्पष्टीकरण की ओर रही हैl भक्ति कालीन निर्गुण संत काव्य भारतीय समाज को आडंबर, हिंसा

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

और वैमनस्य से मुक्त करने का सशक्त माध्यम रहा है ।संत तुलसी साहिब इसी परंपरा के संत कवि हैं जिनका संपूर्ण काव्य आत्मबोध, विवेक और मानवीय मूल्यों पर आधारित है। उनके काव्य में अहिंसा किसी संकुचित धार्मिक विचारधारा के रूप में नहीं बल्कि जीवन के सर्वांगीण मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित है। संत साहित्य के प्रमुख विषयों में सत् व परमतत्व रूपी राम के अनिवर्चनीय रूप का दिग्दर्शन,मायात्व की व्याख्या, जीवात्मा के प्रकृति रूप तथा उसके महत्व का परिचय, परमात्मतत्व के प्रति प्रकट किए गए विभिन्न प्रकार के उद्‌गार, स्वानुभूति परक आत्म निवेदन, नाम स्मरण की साधना, सात्विक जीवन का महत्व, विडंबनाओ की
निषसारता आदि बहुत सी बातें गिनाई जा सकती हैं। संत कवियों ने सांसारिक प्रपंचों में बंधे मोहास्क्त लोगों की जीवन स्थिति का वर्णन अपने काव्य में किया है , और उनके सामाजिक एवं सांप्रदायिक भेदभाव की कटु आलोचना करते हैं। संत कवियों ने ब्रह्मांनुभुति प्राप्त कर चुके संत को सत का ही प्रतीक माना है, और अपने

मार्गदृष्टा गुरु को भी स्वभावत: उसी रूप में प्रतिष्ठित किया है। अपनी काव्य रचना में वे आदर्शों तथा आध्यात्मिक गुणों की प्रमुखता रखते हैं, किसी सांसारिक व्यक्ति विशेष के भौतिक गुण अथवा उसके ऐतिहासिक परिचय का वर्णन नही करते हैं। इसी प्रकार परम सत्य की व्याख्या करते समय भी ऐसी अद्भुत रहस्यात्मक विधि का प्रयोग करते हैं, जिससे किसी प्रकार की कोई मूर्ति भावना स्पष्ट नहीं हो पाती।

संत समाज सदैव जन कल्याण व मुदमंगल की भावना से कार्य करता रहा है।
गोस्वामी तुलसीदास जी भी अपने महनीय ग्रंथ रामचरितमानस में संत समाज की कार्यशैली का यशगान करते हैं।

" मुद् मंगलमय संत समाजू ।
जेहि जग जंगम तीरथ राजू ।। "2

संत साहित्य की रचना जीवन के छण छण को मंगलमय में बनाने के लिए की गई है। संत काव्य का अनुशीलन सदवृतियों के अंकुरण के लिए करना चाहिए। सदवृतियां परमात्मा की ही वांड्मय होती हैं। जीवात्मा का ही बिस्तार हैं । इसलिए बे अमर और अधिकारी हैं । संतवाणी कठिन साधना का परिणाम है। जब जन्म जन्मांतर के पुण्य उदय होते हैं तब प्राणी संत सतगुरु की शरण में जाता है।

"भाग्योदयेन बहुजन्मसमर्जितेन सतसंगम च लभते पुरुषो यदा वै ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

अज्ञान हेतु कृत मोहमदांधकार नाशं विधाय हि तदो दयते विवेक:ll "3

अनेक जन्मों के संचित पुण्य पुंज का उदय होने से मनुष्य को सत्संग मिलता है l तब वह उसके अज्ञान जनित मोह और मदरूप अंधकार का नाश करके विवेक का उदय होता है"

परमात्मा की संपूर्ण सृष्टि परिवर्तनशील है, परंतु सद- वृतियाँ स्थाई हैं l इन्ही सदवृतियों के कारण संत बंदनीय , पूज्यनीय, अनुकरणीय होते हैं l अतः संतो का काव्य केबल काव्य नही बल्कि उनकी आत्मा का वांड्मय प्रति रूप हैं l जिसमें जग मंगल की कामना निहित हैl संतो के काव्य में पक्षपात के लिए किंचित में स्थान नहीं है वहां न कोई जाति धर्म का विचार दिया जाता है न वर्णधर्म के अनुसार किसी को महत्व प्रदान किया जाता हैl संत अनाश्रित होकर कर्म में प्रवृत् होते हैं तभी समाज उनका बंधन करता हैl

निर्गुण ज्ञानमार्गी परंपरा के संत तुलसी साहिब(जिन्हें लोग साहब जी) भी कहते हैंl संतमत के सिद्ध साधक तथा हिंदी साहित्य के बहुत चर्चित व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध हैंl जिनके जन्म काल का विवरण उनके गन्थों के अनुसार सन 1763 ई माना हैl संत तुलसी साहिब ने अपने काव्य में अध्यात्मिक चेतना, सामाजिक समरसता के साथ-साथ अहिंसा का भी उपदेश दिया हैl संतमत के सभी साधकों ने जाति पाति, छुआछूत, ऊंच नीच, वाहआडंबर का विरोध किया हैl निर्गुण परंपरा का प्रारंभ महाराष्ट्र की पवित्र धारा से संत नामदेव से माना गया हैl इसी पावन धरा से परम संत तुलसी साहिब का प्रादुर्भाव हुआ थाl राजघराने में जन्म होने के बावजूद भी सांसारिक सुखों की कामनाएं साहिब जी को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकीं l पिता के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण युवराज बनने थे परंतु उनके

अंत:पुर में भक्ति का अंकुर होने के कारण वे सांसारिक सुखों को त्याग कर वैराग्य के मार्ग पर निकल पड़ेl तुलसी साहब ने भ्रमण करके ग्रामीण अंचलों में सामान्य जनमानस को उपदेश दियाl साहिब जी अपने प्रवचन बहुत ही सरल भाषा में दिया करते थेl जिसे शिक्षित और ग्रामीण कृषक सभी प्रकार के लोग आसानी से समझ लेते थेl"तुलसी साहिब कितने ही वरस तक जंगलों पहाड़ों और दूर शहरों में घूमे और हजारों आदमियों को उपदेश देकर सत्य मार्ग पर लाये, कई बरस पीछे हाथरस शहर में आकर अपना स्थान बनाया वहीं पर अपना सत्संग जारी कियाl "4

संत तुलसी के पास जो भी दिन दुखी इस स्थान पर जिस कामना से आया उसको लौकिक या परलौकिक सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति का मार्ग प्राप्त हुआl ऐसा प्रमाण साहिब जी के गन्थों में दिए गए उदाहरण से प्राप्त होता है संतमत में कर्मकांड का विरोध कर घट के अंदर ही खोज करने का उपदेश दिया गया हैl शब्दावली, घटरामायण रतनसागर तुलसी साहिब द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ हैं, जिनमें बताये गए मार्ग पर चलकर आज भी लोग अपना कल्याण कर रहे हैंl उनके

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

सत्संग में हिंदू मुसलमान सभी आते थे और सबके प्रश्नों का समाधान मिलता था, साहिब जी कहते हैं कि मैंने जो घाट के भीतर देखा है उसी का वर्णन किया हैl

घट भीतर जो देखिया, सो भाखाका विस्तारl
बेदी भेद जनाइया, तुलसी देखि विचार"5

साहिब जी ने कहां है कि मैंने भेद का कारण एवं उसके अनेक भेद रूपों का अंतर स्पष्ट कर दिया है l घट रामायण में तुलसी साहिब ने नौ नाड़ी,पच्चीस प्रकृति शून्य इत्यादि ऐसे विषय थे जो केवल रहस्य दे उनके सरल भाषा में जन सामान्य को समझाया हैl

घट भीतर नौ नाडी भाखी सो तुलसी ने देखा आंखी" 6

<u>अहिंसा तत्व-</u> दया और अहिंसा प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक सभी भारतीय धर्म ग्रंथो का महत्वपूर्ण विषय रहा है, तथा सभी प्रकार की हिंसा को चाहे वह धर्म के नाम पर की जाती हो विरोध किया गया है किंतु "उतरवर्ती यज्ञादि के अनुष्ठानों में पशु बलि प्रारंभ हो गई और मध्यकाल तक आते- शाक्तों वज्रयानियों में हिंसा का तांडव नृत्य होने लगाl मांस् मदिरा सेवन को धर्म विहित माना गयाl कर्मकांडी ब्राहमण और मुल्लाओं की प्रेरणा से धर्म के नाम पर पशुओं की हत्या की जाने लगीl संत कवियों ने इस हिंसात्मक प्रवृत्ति की घोर निंदा की है, और दया तथा हिंसा को मूल मंत्र बताया है संत कवि पलटू साहिब जी अपनी वाणी में कहते हैं कि

"जीव वधत और धर्म कहते हो|
अधर्म कहा है भाई
आपुन तो मुनिजन हवै बैठे ,कासन कहो कसाई || " 7

कसाइयों के समान क्रूर कर्म करने वाले मुनियों की उपाधि से पंडित पाखंडियों को धिक्कारते हुए इन संतों ने कहा है, कि तुम लोग धर्म के नाम पर जो क्रूर कर्म करते हो वह सबसे बड़ा अधर्म है,l

पीर सभी की एक सी मूर्ख जानत नाहि,|
कांटा चुभो पीर है गला काट के खाहि" || 8

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

संत कवि मलूक दास कहते हैं कि सभी के पीड़ा एक समान होती है चाहे पशु हो या मनुष्य यदि पैर में कांटा गड़ जाता है तो असहाय दर्द होता है फिर भी जब निरीह पशुओं की गर्दन पर छुरी चलता है, तब यह भूल जाता है कितनी पीड़ा हो रही होगीl प्रायः सभी संतो ने दया की शिक्षा दी हैl उसे धर्म का आधार माना हैl

संत महापुरुष कहते हैं कि जीव को मन, वचन या कर्म से पीड़ा पहुंचाना पाप हैl जो मनुष्य सिर्फ जिव्हा स्वाद के वशीभूत जीव का वध करता या केवल अपनी शोक या प्रमाद वश जीवों का शिकार करते हैं ,वह नर्क गामी होते हैंl जीव हत्या वही लोग करते हैंl जिनके हृदय में दूसरे जीवों के प्रति दया भाव नहीं होताl सभी धर्म ग्रंथो में दया धर्म का मूल बताया गया हैl जीव हत्या करने वाला प्रत्येक मनुष्य अधर्मी हैl परम संत तुलसी साहिब अपनी वाणी में लिखते हैं

" दयाहीन नर दुष्ट कहावे l नर तन नाहक जनम गंवावेll वनवन खेले जीव शिकारl मारि जीव पुनि करत आहारll
दयाहीन मुख स्वाद सँवारl जीभा का बंधन विस्तारll"9
" जीवात् मारे जीव, कभी दर्द आवे नहींl
तलफत जीव नशाय, बेदर्दी बूझे नहीं"10

दयाहीन व्यक्ति मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं हैl संत तुलसी साहिब अपने उपदेश में यह बात भी स्पष्ट कर देते हैं कि कोई व्यक्ति भले ही अपने हाथ से जीव वध न करे, परंतु वह मांस खाता है तो भी पापी हैl

"ओरे सुनो एक अधमाईl बिन बकरा मरे मांस न आईll बकरा मरे जीव दुख पावेl तब पुनि मांस कसाई लावे ll दयहीन इंद्री सुख भावै l जिभ्या रस मिट्टी बतलावे ll"11

आप बताते हैं कि मुसलमान कुछ लोग यह भ्रम फैलाते हैं कि हम अपने हाथ से किसी जीव की हत्या न करें और भले ही मांस भक्षण करें तो पाप नहीं लगेगा, परंतु साहब जी कहते हैं कि अपने जीव स्वाद के लिए दुकान से लाकर मांस खाना भी पाप है सभी संत महात्मा जीव दया जीव हत्या को निषेध बताते हैं क्योंकि हिंसा फल स्वरुप जीव को अपने कर्मों का भयंकर परिणाम भोगना पड़ता है तुलसी साहिब जी अपनी करनी भरनी को अटल नियम के बारे में उपदेश करते हुए अन्य संत जनों के दृष्टांत भी दिए हैं

"नानक और कबीर सुनाईl दादू दरिया सबने गईl
शब्द साखि के बिच लेउ lविचारी हत्या पाप नरक होइ भारी ll

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

अस अस साधु सबहि पुकारै ।।यह मत नीच कींच के लारै।। यह पुराण में देखा भाई । शास्त्र सवै अनीति बताई।। जग में रीति अनीती जानै ।सो साधन विच साखि वखानै ।। यही विधि संत मुक्त गोहराई ।मांस खाए भौ पार न जाई।।"12

साहब फरमाते हैं कि गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब, दादू साहब ,दरिया साहब आदि समस्त संत महापुरुष ने और सभी धर्म ग्रंथो ने जीव हिंसा को घोर पाप माना है जीव हत्या करने वाला भी और मांस खाने वाला भी दोनों नर्क गामी होते हैं ।उनका कभी भी भवसागर से उध्दार नहीं हो सकता । संत तुलसी साहिब ने भी कबीर साहेब की तरह हिंदू मुसलमान दोनों को फटकार लगाई है

रोजा तीसों निवाज बंद पुकारै ।
कर हलाल कुफर रोज मुरगी मारै।।
मुर्गी का खुदा खोज पूछे भाई।
रोजा निवाज बंद बाद गवाई ले"13

आप कहते हैं कि जो मुसलमान रमजान के महीने में प्रतिदिन रोजा रखता है पांच वक्त की नमाज पढ़ता है और ऊंची आवाज में वांग देता है लेकिन मुर्गी को मारने का कुकर करता है उसके रोज नमाज और वांग व्यर्थ चले जाते हैं ।तुलसी साहिब कुरान का उदाहरण देकर भी जीव हत्या का विरोध करते हैं

" तेरी एक दिन निक से जान। कुफर कुफ़रान में।।
काफिर जुलम जिबह जिव करते बिसमिल हक ईमान।।
परख पैगंबर राह सरे की, यह नहीं कहत कुरान।।
अल्लाह हुकुम मोहम्मद की ना ।
दर्दमंद फरमान।।
करि हलाल वेपीर कसाई, तुलसी तुरकान।।"14

वस्तुत: हिंदू मुस्लिम दोनों धर्मानुयायीयों ने भी अपने जीव स्वाद वश पशु बलि को धर्म पोषित कर दिया था। संत काव्य में इस परंपरा का विरोध किया गया, तथा हिंसा किसी भी प्रकार की हो कायिक, वाचिक, मानसिक सभी के त्याग करने का संदेश दिया है। संत तुलसी साहिब के काव्य में अहिंसा एक व्यापक मानवीय मूल्य के रूप में प्रतिष्ठित है। यह अहिंसा आत्मबोध से आरंभ होकर

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

करुणा, समता,और लोकमंगल तक विस्तृत होती है, उनके काव्य में अहिंसा केवल व्यक्तिगत साधन नहीं बल्कि सामाजिक पुनर्निर्माण का आधार है l साहिब जी के काव्य अहिंसा का दार्शनिक आधार आत्म बोध और विवेक है वे बार-बार इस बात पर जोर देते हैं कि वाहा संयम से अधिक आवश्यक आंतरिक शुद्धि है उनके म तरनुसार मानव में हिंसक प्रवृत्तियां उसके अज्ञान और अहंकार से उत्पन्न होती हैं, जब अहंकार का तिरोभाव हो जाता है तब अहिंसा स्वत: समाप्त हो जाती हैl साहब जी शब्दावली में फरमाते हैं कि जीव हिंसा किसी भी प्रकार की हो कभी भी आपकी उन्नति नहीं कर सकती, कुछ लोग धार्मिक आस्था का सहारा लेकर हिंसा करते हैं और अपनी कुशल छेम की कामना करते हैं, हिंसा करके कुशल चाहना आकाश कुसुम प्राप्त करने की कामना करने जैसा हैl तुलसी साहिब आत्मा को आत्माराम कहते हैं lउनके अनुसार आत्मा परमात्मा का ही रूप है सभी जीवो को परमात्मा के अनुग्रह से जीवन मिला है जिसको उन्हें स्वतंत्र होकर जीने का समान अधिकार है साहिब जी अहिंसा का मन, वचन

,कर्म से पालन करने का उपदेश देते हैं--

देखो नर की भूल सूल ता से सहैl
जीवात मारे जीव प्राण उसके लहैl
देवी बकरा काट सीस उस पै धरैl
बूझै न अंध अचेत जीवित जिव जो मरैl
पूत पराया मार दरद नह लावहींl
कुशल कहाँ तें होय जन्म दुख पावहिंl
वा का भच्छे मांस मौत बिन वो मरैl
जन्म भूत की जॉन जुगन जुग में धरै l
मछली मांस मालीन अधम जिव खात हैं l
सो प्राणी भयेभूत नरक में जाते हैंl
देवी दुर्गा झूठ भवानी पूजतीl
काटि गला बलि देई आंख नहीं सूझती l
तिरिया मछली खाए चुड़ैल सो भईl
होत पुत्र मरि जाएं जन्म वाझन रहीl
तुलसी कहे पुकार जीवित जिन मारे होंl
सब में आत्माराम सुनो नर नारि होl"15

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

प्रस्तुत शब्द के माध्यम से संत तुलसी साहिब बलि प्रथा का स्पष्ट रूप में विरोध करते हैंl देवी पूजन का बहाना लेकर कोई प्राणी हिंसा करता है तो उसकी कुशल नहीं होनी हैl स्त्री पुरुष सभी के लिए हिंसा का पाप समान हैl जो स्त्री मांसाहार करती है वह जन्मो जन्मो तक संतान सुख से वंचित रहतीl तुलसी साहिब की अहिंसा कल्पना त्रिस्तरीय है- मानसिक, वाचिक, कायिक

<u>मानसिक अहिंसा-</u> साहिब जी के मतानुसार हिंसा मन से भी होती है, क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार, घृणा मानसिक हिंसा के रूप हैं, जब तक जीव मानसिक शुद्धता का वरण नहीं करता, तब तक शरीरिक हिंसा सार्थक नहीं हो सकती, इसलिए वे आत्म संयम और अंतःकरण की शुद्धि पर विशेष बल देते हैंl

<u>वाचिक अहिंसा-</u> वाणी मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति हैl कटु वचन निंदा, अपमान, असत्य भी हिंसा के ही रूप हैंl तुलसी साहिब की दृष्टि में मधुर वचन सत्य और करुणा पूर्ण वाणी मानवीय संबंधों को सुदृढ़ करती हैl वाचिक अहिंसा समाज में सौहार्द और विश्वास बढ़ाती हैl

<u>कायिक अहिंसा-</u> कायिक अहिंसा का अर्थ है किसी भी जीव को शारीरिक कष्ट ना देना, तुलसी साहिब सभी प्राणियों के प्रति करुणा का भाव रखते हैं, उनके काव्य में जीव मात्र के प्रति दया भाव स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ता हैl यह अहिंसा केवल मनुष्य तक सीमित नहीं बल्कि समस्त सृष्टि को अपने दायरे में समाहित करती हैl

अहिंसा, करुणा, और मानवीय मूल्यों की स्थापना -संत तुलसी साहिब के काव्य में अहिंसा का व्यावहारिक रूप करुणा हैl करुणा वह भाव है जो मनुष्य को
आत्मकेंद्रितता से मुक्त कर समष्टि से जोड़ता हैl करुणा के माध्यम से ही अहिंसा सामाजिक जीवन में मूर्त रूप लेती हैl साहिब जी की करुणा भावना जाति वर्ग समुदाय से परे कमजोर और उपेक्षित वर्ग के प्रति सहानुभूति, मानव मात्र को समदृष्टि से देखने की प्रेरणा देती हैl जीव मात्र के प्रति दयाभावl

<u>अहिंसा और सामाजिक समता-</u> ज्ञानमार्ग संत तुलसी साहिब का काव्य सामाजिक विषमता और भेदभाव की आलोचना करता हैl उनके मतानुसार हिंसा केवल शारीरिक ही नहीं बल्कि सामाजिक अन्याय और शोषण भी हिंसा के ही रूप हैंl सभी संत कवियों की यह विचारधारा रही है की जातिगत भेदभाव, ऊंच नीच और छुआछूत को समाज से पूर्णतःसमाप्त कर दिया जाएl साहिब जी की अहिंसा चेतना- समाज में अहिंसा की भावना विकसित करती हैl शोषण के विरुद्ध नैतिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

प्रतिरोध प्रस्तुत करती है lमानव गरिमा की रक्षा करती हैl इस दृष्टिकोण से तुलसी साहिब का काव्य सामाजिक समरसता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देता हैl

<u>सहज साधना-</u> संत मत में साधकों के लिए से सहज साधना का मार्ग प्रशस्त किया गया है l संतों की भक्ति पद्धति आनंद और शांति से संयुक्त शुद्ध अंतःकरण की वह स्वाभाविक शक्ति है, जहां कृतिमत्ता स्वत: विलीन हो जाती हैl सहज साधना का यह मार्ग सर्वथा अभिनव और क्रांतिकारी थाl तथा इसने धार्मिक दुरूहताओं को सदैव के लिए हटा दियाl संत तुलसी साहब के काव्य के अनुशीलन से साधक भक्ति मार्ग पर सुगमता से चल जाते हैं l धार्मिक कर्मकांड रहित भक्ति मार्ग साहिब जी ने प्रशस्त किया हैl

<u>नाम जप-</u> ज्ञानमार्गी संत कवियों ने अपने काव्य में" नाम एवं नाम साधना" को बहुत महत्व प्रदान किया हैl ये संत कवि 'नाम तत्व एवं नाम साधना' के महत्व का केवल
गान मात्र करके ही नहीं रह जातेl ये इसके साथ-साथ इतना और स्पष्ट करते हैं कि उन्होंने स्वयं अपने अनुभव से इसका बोध कर लिया हैl संत तुलसी साहिब(हाथरस वाले) की घटना रामायण में यह प्रमाण मिलता है कि उनके अनुसार "सर्वप्रथम केवल अनाम एवं अकायपुरुष
था l जिसकी हिलोर से सत माया हुई तथा माया और नाम के एकत्र हो जाने पर सत्य एवं नाम भी एक सूत्र में बद्ध हो गया जिसके फल स्वरुप सतनाम का आविर्भाव हुआ"16

<u>सामाजिक व्यवस्था-</u> संत कवियों की व्यक्तिगत साधना तथा निवृत्ति पारक युक्तियों के आधार पर कहा जा सकता है कि वे सामाजिक व्यवस्था के प्रति उदासीन थेl सामाजिक व्यवस्थाओं में भेदभाव, ऊँच नीच के कट्टर विरोधी थेl वे लौकिक जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन को अधिक महत्व पूर्ण मानते थेlफिर भी संत महापुरुषों ने अपने काव्य का बहुत बड़ा भाग सामाजिक व्यवस्था, अनैतिकता तथा अनावश्यक विडंबनाओं के विरोध में रचा है, तथा उनने परलोकवाद तक की कटु आलोचना कर डाली हैl परम संत तुलसी साहिब ने अपने ग्रंथ शब्दावली में भेदभाव करने वालों को फटकार लगाइ है लो

" णण ऊंच नीच नहीं देखि पेख सब एक पसराl
नहीं ब्राह्मण नहीं सूद्र नहीं कोई क्षत्री न्यारा।l
नहीं वैष् की जात सकल घट एक पसरा ल
अरे हाँरे तुलसी जो करि जाने दोई खोई जिन जनम विगारा ll"17

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

निष्कर्ष- निष्कर्ष में कह सकते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव विश्व स्तर पर है l वैश्विक भूभाग पर राजनीति से लेकर सामाजिकता, संस्कृति हो या सभ्यता, कौशल हो अथवा ज्ञान, व्यवहारिकता, भाषा, विज्ञान, अनुसंधान, तर्क, विश्लेषण आदि क्षेत्रों तक ज्ञान धारा अपना प्रभाव प्रदर्शित कर रही है l आदिकाल से लेकर वर्तमान समय तक किसी ने किसी रूप में ज्ञान परंपरा में संत साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है l संत तुलसी साहिब जी ने भी समय की दुरुहताओं का सामना करते हुए अपने साहित्य में जनकल्याण, सामाजिक समरसता, विश्वबंधुत्व, अहिंसा, करुणा, दया, सद्भावना का उपदेश दिया हैl उनका संपूर्ण साहित्य आध्यात्मिक शिक्षा के साथ- साथ मानवीय संवेदना से परिपूर्ण है lसाहब जी का उपदेश सहज है कोई साहित्यिक चेष्टा का परिणाम नहीं उनका प्रमुख उद्देश्य मानव कल्याण और मानव मात्र का एक्य है l साहब जी का लक्ष्य धार्मिक सुधार की अपेक्षा समाज सुधार था l उनके साहित्य में नित्य तत्व व सार तत्व पर विशेष बल दिया गया हैl संत तुलसी साहिब निर्गुण परंपरा के होने पर वे भले ही भौतिकवाद से अलग रहे परंतु समाज कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहे ,साहित्य शरीर है तो समाज उसकी आत्मा, साहित्यकार मस्तिष्क बुद्धि और हृदय से संपन्न एक सामाजिक प्राणी होता है वह समाज से पृथक नहीं हो सकता क्योंकि उसकी अनुभूति का समस्त विषय समाज उसकी समस्याएं
जनजीवन और उसके मूल्य हैं जिनमें वह सांस लेता है जब कभी वह अपने को असहज महसूस करता है तो उसकी अभिव्यक्ति साहित्य के रूप में उत्पन्न होती है उसके साथ सृजन की प्रेरणा उसकी समाज के प्रति नैतिक जिम्मेदारी है ll

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1--संपादक डॉ नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ 115
2- गोस्वामी तुलसीदास- वाल कांड रामचरितमानस गीता प्रेस गोरखपुर पृष्ठ 4
3- श्री मदभागवत महात्म्य गीता प्रेस गोरखपुर पृष्ठ 47
4- तुलसी साहिब घट रामायण वेल विडियर प्रेस प्रयाग पृष्ठ 12
5- उपरोक्त - 85
6- उपरोक्त-90
7- पलटू साहिब भाग 3 वेल विडियर प्रेस प्रयाग पृष्ठ 80
8- वियोगी हरि संत वाणी (मलूक दास) पृष्ठ 90
9- साहिब तुलसी, रत्न सागर वेल विडियर प्रेस प्रयाग पृष्ठ 110
10- तुलसी साहिब घट रामायण भाग 2 वेल विडियर प्रेस प्रयाग पृष्ठ 37

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 01, (January-March 2026)

11- उपरोक्त 148

12- उपरोक्त -153

13- तुलसी साहिब शब्दावली भाग 1 पृष्ठ 17

14- उपरोक्त पृष्ठ, 88

15- उपरोक्त 90

16- तुलसी साहिब घट रामायण भाग 1 वेल विडियर प्रेस पृष्ठ 38

17- तुलसी साहिब शब्दावली भाग 1 पृष्ठ 26